प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

वर्तमान समय में मानव और समाज दोनों ही विविध भौतिक साधनों से सम्पन्न हैं, फिर भी उनका मन अशांत है । दिन-प्रतिदिन परस्पर अविश्वास की भावना प्रबल होती जा रही है, जातिय वैमनस्य, धार्मिक कट्टरता, कानून का सरेआम उल्लंघन, महिलाओं का अपमान एवं उनका शोषण, अश्लीलता, बाल मजदूरी, भ्रष्टाचार इत्यादि नैतिक व सामाजिक बुराइयों से समस्त मानव इस जगत में आक्रांत, पीड़ित एवं भयभीत है । इसके साथ ही वर्तमान समय में नैतिक व सामाजिक मूल्यों का विघटन बहुत तेजी से हो रहा है जिससे परस्पर संबंध, सामाजिक रिश्ते व परिवार जैसी संस्था भी विघटित हो रही है । एक देश दूसरे देश से ईर्ष्यात्मक दृष्टिकोण अपनाये हुए है । समाज में चारों ओर भय, अविश्वास तथा अशांति का वातावरण बना हुआ है। इन परिस्थितियों में कैसे एक समाज को आदर्श समाज माना जा सकता है ? कैसे मानव का नैतिक विकास संभव हो सकता है ? कैसे अपने सामाजिक मूल्यों को सुरक्षित रखा जा सकता है ? इसके साथ ही मानव जगत चिंतित है कि वह कैसे जीवन व्यतीत करें, कौन से कर्म करें, अच्छे और बुरे का निर्णय कैसे करें, दूसरे शब्दों में नैतिक जीवन कैसे जीया जाए? ऐसे अनेक प्रश्न हमारे सम्मुख खड़े हैं जिनका हमारे पास कोई समाधान नहीं है । इस

समय एक जो आशा कि किरण हमें नजर आ रही है वह है कि बौद्ध एवं जैन दर्शनों के नैतिक व सामाजिक मूल्यों को एक बार फिर से अपने आचरण में धारण किया जाये । आधुनिक समाज में बौद्ध एवं जैन दर्शनों की शिक्षाओं को अपनाकर व वैश्विक स्तर पर इनको प्रचारित करके उपर्युक्त समस्याओं का समाधान तलाशा जा सकता है क्योंकि दोनों दर्शनों ने ही सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह तथा ब्रह्मचर्य इत्यादि नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों पर बल दिया है । यदि इन मूल्यों को मानव जीवन में अपना लें तो अपने दु:खों के साथ-साथ, समाज में व्याप्त सामाजिक बुराईयों को भी दूर किया जा सकता है । मानव में जो हिंसक प्रवृत्ति बढ़ रही है उसको कम करके शांतिप्रिय वातावरण निर्मित करने के लिए भी ये मूल्य आवश्यक हैं ।

मनुष्य ने आज चिकित्सा, तकनीक, यातायात व कृषि इत्यादि के क्षेत्र में विज्ञान के बल पर कल्पनातीत प्रगति की है । भौतिक सम्पदा की दृष्टि से मनुष्य आज इतना सम्पन्न हो गया है कि उसकी पूरी जाति के लिये पर्याप्त है, लेकिन ज्यों-ज्यों हम अधिक सम्पन्न होते जा रहे हैं, त्यों-त्यों हम नैतिक व सामाजिक मूल्यों से भी दूर होते जा रहे हैं । विशेषकर वर्तमान जीवन में जब मनुष्य आपसी लड़ाई-झगड़े, लालच, ईर्ष्या, धन व शक्ति की लालसा इत्यादि बुराइयों से पूर्णत: ग्रस्त होता जा रहा है तो उसमें नैतिक व

सामाजिक मूल्य बहुत हद तक खत्म होते जा रहे हैं । अत: बौद्ध एवं जैन दर्शनों के नैतिक व सामाजिक मूल्यों की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि इन मूल्यों को धारण करके ही एक व्यक्ति नैतिक व सामाजिक मूल्यों को पुन: स्थापित कर सकता है तथा समाज को खुशहाल बना सकता है ।

बौद्ध एवं जैन दर्शन विश्व के अत्यन्त व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक दर्शन हैं । इनका उद्‌भव जीवन के सत्य की खोज में हुआ । इनका उद्देश्य एक ही था- मानव के दु:खों का निवारण करना । दोनों ने ही नैतिक व सामाजिक मूल्यों के आचरण पर बल दिया है। उन्होंने जड़ हो चुके समाज को चेतना प्रदान की, साथ ही साथ तत्कालीन समाज को नई उर्जा प्रदान की तथा प्रचलित सामाजिक बुराइयों का विरोध किया । उन्होंने समाज में समानता व भाईचारे की भावना स्थापित की और मानव में आध्यात्मिक मूल्यों व तार्किक विचारों का विकास किया ।

बौद्ध तथा जैन दर्शन मानव केन्द्रित दर्शन हैं । इन्होंने बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय और जगत हिताय[1] सिद्धांत के अनुसार मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है । सभी धर्म व्यक्ति को कृपालु बनने, नैतिकता, मित्रता व प्यार का संदेश देते हैं । यदि व्यक्ति को नैतिक मूल्यों से सिंचित किया जाए तो उसमें प्यार व नैतिकता के वृक्ष को विकसित किया जा सकता है, जो एक सभ्य समाज के

लिए आवश्यक है इसी प्रकार वैमनस्यता की भावना में जलते विश्व को बंधुत्व व मित्रता की भावना से ही ठंडा किया जा सकता है। वैश्वीकरण के दौर में हम केवल अपने राष्ट्र का हित करके स्वयं को सुरक्षित महसूस नहीं कर सकते हमें सम्पूर्ण विश्व को शांति व मित्रता का संदेश देना होगा तथा मानव कल्याण को सर्वोपरी बनाना होगा तब ही शांति की स्थापना हो सकती है और यह सब बौद्ध एवं जैन दर्शनों की शिक्षाओं से सम्भव हो सकता है क्योंकि दोनों दर्शनों ने ही सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य इत्यादि नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों पर बल दिया है । आज भागदौड़ भरी जिंदगी में प्रत्येक व्यक्ति मानसिक चिंता तथा अन्य बिमारियों जैसे माइग्रेन, हताशा, कुण्ठा और मन की अस्थिरता इत्यादि से ग्रस्त है बौद्ध-दर्शन की 'ध्यान की विपस्यना पद्धति' उपर्युक्त बिमारियों को दूर करने में उपयोगी सिद्ध हो रही है । अत: बौद्ध एवं जैन दर्शन व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर मानव को बुराइयों से दूर रखने में अहम् भूमिका निभा सकते हैं । इस प्रकार वर्तमान समय में बौद्ध एवं जैन दर्शनों के नैतिक व सामाजिक मूल्यों की प्रासंगिकता को सिद्ध किया जा सकता है ।

1.1 नैतिक व सामाजिक मूल्यों का स्वरूप

1.1.1 मूल्य : स्वरूप व परिभाषा

प्राचीन समय से ही भारतीय दर्शन शुभ व अशुभ, नैतिकता व अनैतिकता के संदर्भ में मानव जगत को दिशा प्रदान करता रहा है। शाब्दिक सन्दर्भ में 'मूल्य' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की 'मूल' धातु के साथ 'यत्' प्रत्यय लगाने से हुई है । जिसका कोशगत अर्थ है - जड़ से उखाड़ने योग्य, खरीदने योग्य (विशेष) कीमत, मजदूरी, वेतन, लाभ तथा पूंजी होता है । हिंदी में 'मूल्य' शब्द अंग्रेजी के वैल्यु (value) के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है। 'वैल्यु' शब्द लैटिन भाषा के 'वेल्योर' से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है - अच्छा, उपयोगी, समर्थ या शक्तिशाली ।[2] अर्थगत संदर्भ में मूल्य क्या है ? इस प्रश्न पर बहुत विद्वानों ने अलग-अलग विचार प्रकट किये हैं ।

जी० ई० मूर ने कहा है, कि "मूल्य एक प्रकार का गुण है जो वस्तुओं में पाया जाता है ।" आगे कहते हैं, कि "सुन्दरता और असुन्दरता मूल्य हैं और वे अनुभवनिरपेक्ष सत्ताएँ भी हैं ।"[3]

मैकेन्जी के अनुसार "मूल्य विवेकशील प्राणी के चिंतन से निकला हुआ विचार है । सुख को न्याययुक्त ढंग से मूल्य के विचार के रूप में वर्णित किया जा सकता है ।"[4]

आर० बी० पेरी के अनुसार "कोई वस्तु, जो भी हो, मूल्य प्राप्त कर लेती है जब किसी प्रकार की रूचि उसमें ली जाती है।"[5] ऐतिहासिकता के आधार पर "सामान्यतः कर्त्तव्य, दया, उपयोगिता, आदर्श तथा नियम संहिता से संबंधित व्यवस्था को मूल्य स्वीकार किया है ।"[6]

अरबन के अनुसार "मूल्य वह है जो मानव-इच्छा की तृप्ति करे, जो व्यक्ति और उसकी जाति के संरक्षण में सहायक हो ।" मूल्य की अवधारणा में सुधार करते हुए उन्होंने कहा है कि, "केवल वही परम रूप से और साध्य रूप से मूल्यवान है जो आत्माओं के विकास या आत्म-साक्षात्कार की ओर ले चले ।"[7]

हेराल्ड एच० टीटस के अनुसार - "मूल्य, व्यक्ति और वातावरणीय परिस्थितियों के बीच एक संबंध है जो व्यक्ति को प्रशंसनात्मक प्रतिक्रिया करने के लिए जागृत करता है ।"[8]

गोबिन्द चन्द्र पाण्डे के अनुसार - "मूल्य किसी पदार्थ की ऐसी विशेषता है जिसका सही पता उसे परखने पर चलता है कि जिसका पता चलने पर चेतना उसकी ओर एक प्रशंसनीयता के भाव से आकृष्ट होती है और उसकी यथा योग्य प्राप्ति को उचित मानती है ।"[9]

साधारण अर्थ में मूल्य वह है जो हमारे लिए 'शुभ' है । कोई भी वस्तु या पदार्थ, जिससे जीवन की रक्षा और वृद्धि होती

हो, वह मूल्यवान है । केवल आधारभूत आवश्यकताओं यथा भोजन, वस्त्र व आवास की प्राप्ति होने पर हम ये नहीं कह सकते कि जीवन के समस्त मूल्यों की प्राप्ति हो गयी है । मनुष्य में शरीर, मन और बुद्धि के साथ आत्मा का भी अस्तित्व होता है, मनुष्य में बाह्य क्रियाओं के साथ-साथ आंतरिक उद्‌बोधन की भी क्षमता होती है जो उसे अन्य प्राणियों से अलग करता है तथा उसे उच्चतर मूल्यों की ओर जाने के लिए प्रेरित करता है । जिससे मनुष्य को आत्म साक्षात्कार करा देने वाले मूल्यों सत्यम, शिवम् एवं सुन्दरम् के महत्त्व का ज्ञान होता है ।[10] सापेक्षवादी धारणा के अनुसार मूल्य न तो वस्तु में निहित होते हैं और न ही केवल आत्मा में, इसकी स्थिति दोनों के सापेक्ष संबंध पर निर्भर करती है । मूल्यों को विषयगत तथा विषयीगत दोनों के समन्वित आधार पर स्वीकार किया जा सकता है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि -

- मूल्य जीवन-लक्ष्य एवं जीवन पथ निर्धारित करते हैं ।
- मूल्यों का संबंध आदर्श और जीवनगत शुभता से है ।
- मूल्य मानवीय चिंतन की परिणति है ।

- मूल्य वह अवधारणा है जो मनुष्य को औचित्यपूर्ण जीवन जीने के लिए तथा लक्ष्य पूर्ति के लिए आंतरिक शक्ति प्रदान करती है।
- मूल्यों की स्थापना समाज द्वारा अपनी शुभ मान्यताओं के आधार पर की जाती है ।

उपर्युक्त परिभाषाओं में मूल्यों को जीवन लक्ष्य एवं जीवन आदर्श मानकर परिभाषित करने की चेष्टा की गई है । अंततः मनुष्य केवल जीना नहीं चाहता अपितु अच्छा जीवन चाहता है । इसलिए जिसके कारण जीवन अच्छा या शुभ होता है, वह मूल्यवान है । मूल्य मानव विवेक द्वारा रचित वे सामाजिक धारणाएं हैं जो मानव को मानवोचित जीवन जीने के योग्य बनाती हैं तथा जिससे मनुष्य को आत्मानुभूति होती है । मूल्य विभिन्न प्रकार की सत्ताओं के परस्पर संबंध पर आधारित एक अवधारणा है ।

1.1.2 मूल्यों का वर्गीकरण

मूल्यों की धारणा अमूर्त है, इसलिये इनके वर्गीकरण का कोई निश्चित आधार नहीं अपनाया जा सकता । 'मूल्य' व्यक्ति, समाज एवं काल सापेक्ष है इसलिये पश्चिमी एवं पूर्वी विचारकों ने भिन्न-भिन्न रूप में मूल्यों को प्रतिपादित किया है । भारतीय चिंतन धारा में आध्यात्मिकता को महत्त्व दिया गया है जिससे मूल्यों का वर्गीकरण भी आध्यात्मिक दृष्टिकोण के आधार पर किया गया है ।

इस चिंतन धारा में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को जीवन का लक्ष्य माना गया है इनमें अर्थ और काम जैविक अस्तित्त्व के लिए जरूरी है । धर्म; अर्थ और काम की उच्छृंखलता को संयमित करके, मानव को सात्त्विक जीवन बिताने की प्रेरणा देता हुआ उसे मोक्ष की ओर प्रवृत्त करता है ।

इसलिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के मूल्यों को लक्ष्य की दृष्टि से साधनात्मक मूल्य तथा साध्यात्मक मूल्य के रूप में विभाजित किया जाता है ।

इसके विपरीत पश्चिमी देशों में भौतिकवाद को अधिक बल दिया गया है । इसलिए वर्गीकरण भी इसी आधार पर किया गया है। प्लेटों ने मूल्यों को श्रेयस अथवा शिव तत्त्व का पर्याय माना है और विश्व प्रपंच का रचनात्मक सिद्धांत तथा विधि विधान का मूल आधार बताया है ।

मूल्यों के प्राथमिक भेद दो हैं :

1. आंतरिक मूल्य
2. सहायक मूल्य

आंतरिक मूल्य वे मूल्य हैं जिनका प्रयोग प्रशंसा, मान, महत्ता आदि के लिए किया जाता है । सहायक मूल्य आंतरिक मूल्य के सहायक तत्त्व है जैसे समाज में व्यवस्था बनाना सहायक मूल्य है और शांति बनाना आंतरिक मूल्य है ।

पाश्चात्य दर्शन के अनुसार मूल्यों का वर्गीकरण

विद्वानों ने मूल्यों का वर्गीकरण अलग-अलग आधारों पर किया है ।

डब्लयू० जी० एवरेट ने मूल्यों को दो वर्गों में बांटा है[11], प्रत्येक वर्ग के कुछ उपवर्ग किए हैं जो इस प्रकार है :

1. **उच्चतर मूल्य :**

   सौन्दर्य मूल्य - (कला)

   धार्मिक मूल्य - (पुण्य)

   बौद्धिक मूल्य - (ज्ञान, सत्य)

   चारित्रिक मूल्य - (भद्रता, अच्छाई)

2. **निम्नतर मूल्य :**

   शारीरिक मूल्य - (स्वास्थ आदि)

   श्रम मूलक मूल्य - (आर्थिक तथा अन्य)

   सामाजिक मूल्य - (सहचर्य, संघ संस्था)

जे० एस० मैकेन्जी ने मूल्यों को शुभ और अशुभ के आधार पर दो वर्गों में बांटा है । उनके अनुसार मूल्यों की एक क्रम व्यवस्था होती है । एक वस्तु दूसरी वस्तु से अधिक उपयोगी होती है, मूल्यों को आस्ति मूल्य तथा नास्ति मूल्य भी माना जा सकता है। ऐसी कोई भी वस्तु जिसका आस्ति मूल्य हो, वह शुभ है इसके विपरित जिस वस्तु का नास्ति मूल्य है, उसे हम अशुभ कहते हैं ।[12]

धर्म एवं दर्शन के "विश्व कोश"[13] में मूल्यों को छः भागों में बांटा गया है -

1. सुखात्मक मूल्य
2. सौन्दर्यात्मक मूल्य
3. उपयोगितामूलक मूल्य
4. धार्मिक मूल्य
5. तर्कमूलक मूल्य
6. नैतिकतापरक मूल्य

"अरबन"[14] द्वारा किया गया वर्गीकरण सर्व मान्य है जो इस प्रकार है-

मूल्यों की तालिका

मूल्य-प्रकार	मूल्य	सम्बन्धित मूल प्रवृत्ति
जैविक	शारीरिक,	क्षुधा व काम-प्रवृत्ति
	आर्थिक	संग्रह-प्रवृत्ति, शरीर-श्रम
	मनोरंजनात्मक	खेल
अति जैविक (सामाजिक)	साहचर्यात्मक	सामूहिकता की प्रवृत्ति
	चरित्रात्मक	सहानुभूति, आत्म-प्रकाशन, आत्म-धिक्कार, संघर्ष
अति जैविक (आध्यात्मिक)	बौद्धिक	जिज्ञासा
	सौंदर्यात्मक	रचना, अनुकरण, क्रीड़ा
	धार्मिक	श्रद्धा, आस्तिकता

अरबन के इस वर्गीकरण में सभी प्रकार के मूल्यों का नाम आ जाता है, लेकिन नैतिक मूल्य को कोई स्थान नहीं दिया गया जबकि नैतिक मूल्य अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखते हैं ।

भारतीय दर्शन के अनुसार मूल्यों का वर्गीकरण

भारतीय दर्शन में अध्यात्मिकता पर अधिक बल दिया गया है इसलिए मूल्यों को पुरुषार्थ का पर्याय मानकर चार भागों **धर्म, अर्थ, काम** और **मोक्ष** में बांटा गया है । 'अर्थ' व 'काम' मनुष्य के भौतिक व सामाजिक जीवन से जुड़े हुए हैं । 'धर्म' किसी भी कार्य, चिंतन अथवा उपलब्धि के क्षेत्र में नैतिकता का सूचक है तथा मोक्ष का संबंध आध्यात्मिक चिंतन से है । धर्म व्यक्ति को संयम व नैतिकता का पालन करने के लिए अभिप्रेरित करता है ।[15]

वेद संहिताओं में मूल्य के लिए 'नीति' शब्द का प्रयोग हुआ है । इन संहिताओं में वर्णित व्यवहार की सत्यता एवं सरलता को सामाजिक मूल्यों व वैयक्तिक मूल्यों के रूप में देख सकते हैं । हमारी बुद्धि सत्कर्मों की ओर प्रेरित हो तथा जीवन में प्रकाश की ओर बढ़ने के लिए ऋग्वेद में गायत्री मंत्र का विधान किया गया है ।[16] सामाजिक मूल्यों के पालन करने के लिए धर्माचरण पर बल दिया गया है और सामाजिक अभ्युत्थान के लिए एक राष्ट्र धारण करने का आग्रह किया गया है – 'राष्ट्रमुधारय' ।[17]

गोबिन्द चन्द्र पाण्डे ने मूल्य-मीमांसा में व्यावहारिक, आदर्श व पारमार्थिक मूल्यों की व्याख्या की है । **व्यावहारिक मूल्य** में उन्होंने

धर्म, अर्थ व काम को रखा है । **आदर्श मूल्य** बौद्धिक आत्मबोध जैसे प्रेम, करुणा व विशुद्ध कर्त्तव्य बोध से जुड़े हुए हैं । पारमार्थिक मूल्य सूक्ष्म और स्थूल से परे होते हैं, **पारमार्थिक मूल्य** पूर्ण सत् होते हैं । इनके द्वारा मूल्यों का वर्गीकरण भारतीय आध्यात्मिकता के संदर्भ में ही किया गया है ।[18]

उपर्युक्त परिभाषाओं व वर्गीकरण से स्पष्ट होता है कि पाश्चात्य व भारतीय विश्लेषकों की अवधारणायें स्थूल व सूक्ष्म रीति से एक दूसरे के सन्निकट प्रतीत होती हैं ।

सामान्यत: मूल्यों को निम्न वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

1. वैयक्तिक मूल्य
2. शारीरिक मूल्य
3. सामाजिक मूल्य
4. राजनैतिक मूल्य
5. नैतिक मूल्य
6. आर्थिक मूल्य
7. आध्यात्मिक मूल्य

शोध विषय को ध्यान में रखते हुए यहाँ केवल नैतिक व सामाजिक मूल्यों की ही विस्तृत चर्चा करना अपेक्षित है जो इस प्रकार है–

1.1.3 नैतिक मूल्य

नीति, नैतिकता व मूल्य का संबंध मनुष्य के व्यवहार एवं आदर्श व्यक्तित्व से है । नैतिकता का संबंध मनुष्य के आदर्श व्यवहार से है जो उसे अच्छा और बुरा या उचित व अनुचित का बोध कराता है ।

किसी समाज, राष्ट्र और धर्म के द्वारा बनाये गये नियमों व आदर्शों के अनुसार आचरण करना नैतिकता है । 'नैतिक मूल्य' दो शब्दों 'नैतिक' व 'मूल्य' का मेल है । नैतिक का अर्थ है जो सही, शुभ और उचित है और मूल्य से अभिप्राय समाज के सदस्यों को जीवन का पथ-प्रदर्शन, लक्ष्य व उच्च आदर्शों की ओर प्रेरित करना है । अत: नैतिक मूल्य से अभिप्राय है- वह उचित या शुभ व्यवहार या कार्य जो उच्च आदर्शों की प्राप्ति के लिए किया जाए । किसी व्यक्ति के मूल्य अच्छे या बुरे हो सकते हैं परंतु नैतिकता सदैव शुभ की ओर संकेत करती है ।

समाज द्वारा निर्धारित नियमों के अनुकूल मनोवृत्तियों से सम्बन्धित मूल्य ही 'नैतिक मूल्य' कहलाते हैं । नैतिक मूल्य सिद्धान्तों का एक पुंज है जो व्यक्ति को सही और गलत का मूल्यांकन करने के लिए दिशा प्रदर्शित करता है । विलियम के॰ फ्रैंकेना ने कहा है कि नैतिक मूल्य मनुष्य के चरित्र व कर्म जैसे विषयों से सम्बन्धित हैं ।

नैतिक मूल्य इंद्रिय अथवा मानस प्रत्यक्ष के विषयों पर आश्रित धर्म है । यह एक प्रकार का शील है जो आचार का प्रायिक नियामक होता है ।[19]

भारतीय संस्कृति में सदैव नैतिक मूल्यों को अधिक महत्त्व दिया गया है । सभी भारतीय दार्शनिक (चार्वाक को छोड़कर) एक शाश्वत नैतिक व्यवस्था में विश्वास रखते हैं । भारतीय दर्शन में दया, दान, सत्यता, अहिंसा, उदारता, करूणा, मानव-कल्याण और संयम को प्रमुख नैतिक मूल्य स्वीकार किया गया है । प्राय: धर्म और मोक्ष शब्दों का भी नैतिक-मूल्यों में आकलन कर लिया जाता है, जिससे इसका क्षेत्र व्यापक हो जाता है ।

यजुर्वेद में असत्य से सत्य की ओर प्रवृत्त होने - इदम् हम नृतात सत्यभुपैमि" और अहिंसा को अपने आचरण का हिस्सा बनाने का उपदेश "मा वा हिं सीन्मा मा हिंसी:"[20] दिया गया है ।

नैतिक मूल्यों को वैयक्तिकता व मुख्य रूप से सामाजिकता के आधार पर परखा जाता है । मानव कल्याण के लिए जब कोई कदम उठाया जाता है, तब एक वर्ग उसे नैतिकता की संज्ञा दे सकता है तो दूसरा वर्ग उसे अनैतिक कह सकता है । नैतिक-अनैतिक का निर्णय 'कार्य के परिणाम' से होता है । नैतिक मूल्य व्यक्तिगत आचार संहिता पर बल देते हैं । उदाहरण के लिए एक कम्पनी में काम करने वाला व्यक्ति कम्पनी में चोरी करने या समय पर कार्य न करने पर वह अपनी नौकरी खो देता है, यह उसका व्यक्तिगत

आचार व व्यवहार था, जिसका प्रभाव उसी व्यक्ति पर पड़ा है, अन्य पर नहीं । नैतिक पतन के कारण आज के युग में नैतिक मूल्यों के अध्ययन का महत्त्व बढ़ गया है । आधुनिक युग में संस्कृति और सभ्यता में परिवर्तन आने से नैतिक मूल्यों में भी परिवर्तन आ गया है । पुराने समय में मूल्य व्यक्तिगत थे वहीं आज के युग में मूल्य वस्तुपरक हो गए हैं । आधुनिक मानव रूढ़िवादी मूल्यों को छोड़कर सेवा भाव, सहानुभूति, प्रेम, अहिंसा इत्यादि के मूल्यों को अपनाना चाहता है । इसके साथ ही मानवतावाद, राष्ट्रीयता और अंतर्राष्ट्रीयतावाद भी नैतिक मूल्य बन गए हैं ।

1.1.4 सामाजिक मूल्य

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । मनुष्य अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं नहीं कर सकता । अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसे परिवार व समाज से सहयोग की जरूरत होती है । परिवार से ही समाज बना है इसलिए व्यक्ति का परिवार के प्रति उत्तरदायित्व होने पर स्वत: ही समाज के प्रति भी उसका उत्तरदायित्व हो जाता है । समाज में रहने के कारण व्यक्ति की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति समाज से होती है । जिन वस्तुओं या पदार्थों से व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है उन्हें सामाजिक मूल्य कहा जा सकता है जैसे प्रेम, सहानुभूति, मैत्री, ईमानदारी, सच्चाई, प्रतिष्ठा । ये सभी मूल्य समाज से जुड़े हुए हैं । यदि मनुष्य समाज में न रहकर एकान्तवास करता

है तो उसे ईमानदारी, सच्चाई, प्रतिष्ठा व दया आदि मूल्यों की आवश्यकता ही नहीं पड़ती ।[21] इन मूल्यों के पालन की अपेक्षा समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति से की जाती है । सामाजिक मूल्य व्यक्ति के एकाकीपन को दूर करते हैं । मनुष्य के वे कर्त्तव्य जो समाज के आदर्शों के अनुरूप हो, सामाजिक नैतिकता कहा जाता है । यदि इन सिद्धान्तों या मूल्यों का उल्लंघन किया जाता है तो समाज में अव्यवस्था उत्पन्न हो सकती है ।[22] दूसरे शब्दों में, व्यक्ति का वह अपेक्षित व्यवहार जो समाज के कल्याण या लाभ के लिए आवश्यक समझा जाता है, सामाजिक मूल्य कह सकते हैं ।

समाज अपने सदस्यों से यह अपेक्षा करता है कि वे निजी स्वार्थों की उपेक्षा करके वह कार्य करे जिससे स्वस्थ समाज का विकास हो, चाहे उससे उसके व्यक्तिगत अहित ही क्यों न हो जाते हो । इस प्रकार सामाजिक मूल्य वह अपेक्षित व्यवहार है जिसमें समाज का लाभ निहित होता है जैसे बड़ों का सम्मान करना, माता-पिता की सेवा करना, गरीब तथा लाचार की सेवा करना, करूणा भाव, सत्य बोलना आदि । भारतीय नीतिशास्त्र में जहाँ नैतिक सिद्धान्तों का कठोरता से पालन करने का आदेश दिया है वहीं दूसरी ओर सामाजिक विकास के लिए समाज के संदर्भ में नवीन परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बनाने का भी प्रयास किया गया है ।

भारतीय नीतिशास्त्र में अहिंसा को परम धर्म माना गया है । शुक्रनीति में बतलाया है कि हिंसा सब पापों से बढ़ कर है ।

हिंसा गरीयसी सर्वपापेभ्योऽनृतभाषणम् ॥206॥

गरियस्तरमेताभ्यां युक्तान्मश्त्यान्न धारयेत् ।[23]

हिंसा का परिणाम व्यक्ति को स्वयं प्रभावित न करके समाज के किसी अन्य प्राणी को प्रभावित करता है । अहिंसा को जीवन में धारण करने पर सामाजिक मूल्य पल्लवित होते हैं । 'वसुधैव कुटुम्बकम्'[24] के विचार शांतियुक्त व सौहार्दपूर्ण समाज को निर्मित करता है । इसी प्रकार ब्रह्मचर्य, अस्तेय व अपरिग्रह जैसे मूल्यों के पालन की अपेक्षा समाज द्वारा व्यक्ति से रखी जाती है । सामाजिक मूल्य समाज में व्यवस्था निर्मित करते हैं इनके अभाव में एक सभ्य, व्यवस्थित व आदर्श समाज की कल्पना नहीं की जा सकती ।

इसलिए आदर्श चरित्र व आदर्श समाज के निर्माण में नैतिक मूल्यों के साथ-साथ सामाजिक मूल्यों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है।

1.2 बौद्ध-दर्शन के नैतिक व सामाजिक मूल्य

महात्मा बुद्ध के नैतिक विचारों का भारतीय नीतिशास्त्र में महत्त्वपूर्ण स्थान है । बौद्ध नीतिशास्त्र या बौद्ध के नैतिक सिद्धांत देशकाल की सीमा में बंधे हुए नहीं हैं । उनका नीतिशास्त्र लौकिक जीवन की समस्याओं का समाधान देता है । उनके नीतिशास्त्र का प्रमुख उद्देश्य जीवन के दु:खों से मुक्ति पाना था । उन्होंने समस्त मानव जगत् के समक्ष विश्व-बंधुत्व का सिद्धांत प्रस्तुत किया । उनके

द्वारा प्रतिपादित चार आर्यसत्य और उनकी विस्तृत व्याख्या ने ही बौद्ध-दर्शन की प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली । गौतम बुद्ध ने वही कहा जो जीवन के लिए उपयोगी व व्यावहारिक है । वे मनुष्य का ध्यान कोरे अध्यात्मवाद से हटाकर नैतिकता की ओर लगाने में प्रयत्नशील थे । बुद्ध की समस्त शिक्षाएं 'चार आर्यसत्यों' में समाई हुई हैं । महात्मा बुद्ध ने मानव के दु:खों के कारणों की खोज की तथा उनके निवारण के लिए जन्म-मरण के सागर से पार जाने का मार्ग दिखाया। इसे उन्होंने चार आर्यसत्य के रूप में अभिव्यक्त किया । "दुक्खे अरियसच्चे, दुक्खसमुदये अरियसच्चे, दु:खनिरोधे अरियसच्चे, दु:खनिरोधगामिनिया प्रतिपदाय अरियसच्चे"[25] अर्थात् ये चार आर्य सत्य हैं -

सर्वं दु:खम् अर्थात् संसार दु:खों का घर है,

दु:ख समुदय: अर्थात् दु:खों का कारण है,

दु:ख निरोध अर्थात् दु:खों से छुटकारा पाया जा सकता है,

दु:ख निरोधगामी प्रतिपद् अर्थात् दु:खों से छुटकारा पाने का मार्ग है ।

महात्मा बुद्ध ने दुसरे आर्य-सत्य में दु:ख उत्पन्न होने का कारण बताया है । दु:ख की कारण शृंखला में अविद्या, संस्कार, विज्ञान, नामरूप, षड़ायतन, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान, भव, जाति एवं जरामरण आदि 12 कड़ियाँ बतायी हैं जिन्हें द्वादश निदान भी कहते हैं ।[26] चतुर्थ आर्य सत्य में दु:ख को दूर करने का उपाय

बताया गया है जिसे 'मध्यम मार्ग या आष्टांगिक-मार्ग' कहा जाता है। बुद्ध ने 'आष्टांगिक-मार्ग' के माध्यम से मनुष्य के दु:खों को दूर करने का मार्ग प्रस्तुत किया । बुद्ध के आष्टांगिक-मार्ग को ही शिक्षाओं के नाम से जाना जाता है जो इस प्रकार से हैं :-

सम्यक्-दृष्टि अर्थात् वस्तु के वास्तविक स्वरूप का ध्यान रखना,

सम्यक्-संकल्प अर्थात् रागद्वेष मुक्त विचार रखना,

सम्यक्-वाक् अर्थात् अप्रिय वचनों का त्याग करना,

सम्यक्-कर्मान्त अर्थात् सत्कर्मों का अनुसरण करना,

सम्यक्-आजीविका अर्थात् सदाचार के अनुकूल जीविका चलाना,

सम्यक्-व्यायाम अर्थात् नैतिक-मानसिक उन्नति के लिए प्रयत्न करना,

सम्यक्-स्मृति अर्थात् सच्ची धारणा रखना,

सम्यक्-समाधि अर्थात् मन अथवा चित्त की एकाग्रता ।[27]

नैतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण कुशल व अकुशल कर्मों को भी बौद्ध-दर्शन में निरूपित किया गया है।

	अकुशल कर्म	**कुशल कर्म**
कायिक कर्म	1. प्राणातिपाद (हिंसा)	1. अहिंसा
	2. अदत्तदान (चोरी)	2. अचौर्य
	3. मिथ्याचार (व्यभिचार)	3. अव्यभिचार
वाचिक कर्म	4. मृषावचन (झूठ)	4. अमृषा वचन
	5. पिशुन वचन (चुगली)	5. अपिशुन वचन
	6. परुश वचन (कटुवचन)	6. अकटु वचन

	7. सम्प्रलाप (बकवाद)	7. असम्प्रलाप
मानस कर्म	8. अभिध्या (लोभ)	8. अलोभ
	9. व्यापाद (प्रतिहिंसा)	9. अप्रतिहिंसा
	10. मिथ्या दृष्टि (झूठी धारणा)	10. अमिथ्या दृष्टि

पंचशील

बौद्ध-दर्शन में पांच कर्म सभी के लिए अनिवार्य बताये गए हैं जिन्हें पंचशील कहा गया है । वे हैं - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और मादक द्रव्यों का असेवन ।

इनके अतिरिक्त बौद्ध-दर्शन के **क्षणभंगुर** व **अनीश्वरवाद** के सिद्धांत भी वर्तमान संदर्भ में महत्त्व रखते हैं ।

बौद्ध दर्शन के 'मध्यम मार्ग' को **प्रज्ञा, शील व समाधि** नामक अंगों में विभाजित किया गया है । सम्यक् दृष्टि और सम्यक् संकल्प, को 'प्रज्ञा' के अंतर्गत रखा गया है । सम्यक् वाक्, सम्यक्, कर्मान्त, सम्यक् आजीविका और सम्यक् व्यायाम, 'शील' के अंतर्गत आते हैं। सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि, को 'समाधि' के अंतर्गत रखा गया है । 'प्रज्ञा' का अभिप्राय परम सत्यों का साक्षात्कार है। 'शील' का अभिप्राय मन, वचन और शरीर से अहिंसा एवं सत्यतापूर्वक सदाचार का आचरण करना तथा 'समाधि' से तात्पर्य चित्त का समाधान, परम शांति तथा तृष्णा का अंत है ।[28]

बौद्ध-दर्शन में एक आदर्श समाज के लिए **मैत्री, करूणा, मुदिता व उपेक्षा** जैसे भावों को भी धारण करने के लिए कहा गया है ।

'आष्टांगिक-मार्ग' में प्रथम दो (सम्यक् दृष्टि और सम्यक् संकल्प) और अंतिम दो सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि का स्वयं व्यक्ति से संबंध है जबकि सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीविका, और सम्यक् व्यायाम समाज से जुड़े हुए हैं ।[29] इस प्रकार कह सकते हैं कि बौद्ध-दर्शन में सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि नैतिक मूल्य हैं । सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीवका और सम्यक् व्यायाम सामाजिक मूल्य हैं । सामाजिक मूल्यों के पालन करने या न करने पर व्यक्ति की बजाय समाज पर अधिक प्रभाव पड़ता है लेकिन हम यह नहीं कह सकते कि व्यक्ति पूर्णत: निष्प्रभावित रहता है क्योंकि व्यक्ति और समाज एक दुसरे से अंतर्सम्बन्धित हैं । नैतिक व सामाजिक मूल्यों में विभेद व्यक्ति व समाज को प्रभावित करने की मात्रा पर ही किया जा सकता है । अत: बौद्ध-दर्शन में भी नैतिक व सामाजिक मूल्य एक दुसरे से जुड़े हुए हैं उनके मध्य एक सीधी रेखा खींचना सम्भव नहीं है ।

1.3 जैन-दर्शन के नैतिक व सामाजिक मूल्य

जैन नीतिशास्त्र को दो आधार पर समझा जा सकता है प्रथम लक्ष्य और दूसरा लक्ष्य प्राप्ति का साधन । जैन-दर्शन में जीवन का

लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है और लक्ष्य प्राप्ति के साधन त्रिरत्न - सम्यग्, दर्शन, सम्यग् ज्ञान और सम्यग् चरित्र हैं ।

तत्त्वार्थ सूत्र में कहा गया है - "सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित्राणि मोक्षमार्गः"[30] अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान तथा सम्यग् चरित्र तीनों की सम्मिलित साधना द्वारा मोक्ष का मार्ग उपलब्ध होता है ।

सम्यग्-दर्शन से हम जीवन को श्रद्धामय बनाते हैं,

सम्यग्-ज्ञान से हम पदार्थों के सही स्वरूप को समझते हैं,

सम्यग्-चरित्र से हम सुकर्म की ओर प्रेरित होते हैं ।

इन तीनों का जब हमारे जीवन में विकास होता है, तभी हमारे जीवन में पूर्णता आती है । जैन-दर्शन की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानव को संयमी, जागरूक तथा चरित्र-संपन्न बनाना हैं तभी मानव का कल्याण संभव है ।

मानव व समाज के नैतिक कल्याण के लिए सम्यग् चरित्र पर सर्वाधिक बल दिया गया है । सम्यक् चरित्र के पालन के लिए निम्नलिखित आचरणों का पालन करना आवश्यक है -

1. समिति

समिति से अभिप्राय है- सावधानी अर्थात् हमें कुछ सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए । जैन-दर्शन में पांच समितियां हैं जो हैं - ईर्या समिति, भाषा समिति, एषण समिति, आदान-निक्षेपण समिति और उत्सर्ग समिति ।

2. गुप्ति

मन, वचन तथा शारीरिक कर्मों पर संयम रखने को जैन-दर्शन में गुप्ति कहा गया है । तीन गुप्ति इस प्रकार हैं - कायगुप्ति, वाक् गुप्ति और मनो गुप्ति ।

3. दस प्रकार के धर्मों का पालन करना भी आवश्यक है । दस धर्म इस प्रकार हैं - सत्य, क्षमा, शौच, तप, संयम, त्याग, विरक्ति, मार्दव, सरलता और ब्रह्मचर्य ।[31]

4. पंच महाव्रत

पंच महाव्रत को सभी आचरणों से महत्त्वपूर्ण माना गया है । पंच महाव्रत को बौद्ध-दर्शन में पंचशील कहा गया है । कुछ विद्वानों ने पंच महाव्रत का पालन ही सम्यग् चरित्र के लिए पर्याप्त माना है। इस सम्बन्ध में पंच महाव्रतों के पालन का विधान है जो इस प्रकार है -

प्रथम अहिंसा का मार्ग अर्थात् मन, वचन तथा कर्म से किसी के प्रति असंगत व्यवहार हिंसा है । अत: मनुष्य को अहिंसा के मार्ग का पालन करना चाहिए,

दूसरा सत्य का मार्ग अर्थात् मनुष्य को सदा सत्य तथा मधुर बोलना चाहिए,

तीसरा अस्तेय का मार्ग अर्थात् बिना अनुमति के न तो किसी वस्तु को ग्रहण करना चाहिए और न ही उसकी इच्छा करनी चाहिए,

चौथा अपरिग्रह का मार्ग अर्थात् इसमें किसी भी प्रकार की संपत्ति एकत्रित न करने पर जोर दिया गया है क्योंकि संपत्ति से मोह और आसक्ति का उदय होता है ।

अंतिम ब्रह्मचर्य का मार्ग है अर्थात् ब्रह्मचर्य के अन्तर्गत इन्द्रियों पर संयम रखने को महत्त्व दिया गया है ।[32]

5. अनुप्रेक्षाएँ

चरित्र पालन के लिए जैन-दर्शन में बारह अनुप्रेक्षाओं को भी स्थान दिया गया है ।

जैन दर्शन में **द्वादश व्रत** के पालन का भी विधान है जो मनुष्य को मोक्ष की ओर ले कर जाते हैं । इसके अतिरिक्त **स्याद्वाद** का सिद्धांत भी व्यक्ति के सोचने की विधि को प्रभावित करता है ।

वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर अशांति, अविश्वास की भावना तथा एक-दूसरे से भय की स्थिति को दूर करने में इनकी महत्ती आवश्यकता है । जैन-दर्शन के त्रिरत्न को ही नैतिक व सामाजिक मूल्य कहा जा सकता है। सम्यग् दर्शन व सम्यग् ज्ञान व्यक्ति के अंतर्बोध से जुड़े हुए हैं इन्हें हम नैतिक मूल्यों की संज्ञा दे सकते हैं जबकि सम्यग् चरित्र व्यक्ति के व्यवहार से संबंधित है जो व्यक्ति के साथ-साथ समाज से जुड़ा हुआ है इन्हें हम सामाजिक मूल्य कह सकते हैं । व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास के लिए दोनों की अर्थात् नैतिक व सामाजिक मूल्यों की समान महत्ता है ।

1.4 बौद्ध एवं जैन दर्शनों के नैतिक व सामाजिक मूल्यों की प्रासंगिकता

वर्तमान समय में समाज में अनेक बुराइयां विद्यमान हैं जैसे – जातिय वैमनस्य, धार्मिक कट्टरता, कानून या सरेआम उल्लंघन, महिलाओं का अपमान एवं उनका शोषण, अश्लीलता, बलात्कार, वेश्यावृत्ति, दहेज प्रथा, बाल मजदूरी, भ्रष्टाचार इत्यादि । इन बुराइयों से समस्त मानव जगत आक्रांत व पीड़ित है । इसके साथ ही वर्तमान समय में सामाजिक मूल्यों का विघटन बहुत तेजी से हो रहा है । सम्पूर्ण विश्व में हिंसा, अपराध, भ्रष्टाचार, चोरी जैसी प्रवृत्तियां बढ़ती जा रही हैं जिससे समाज में चारों ओर भय, अविश्वास तथा अशांति का वातावरण बना हुआ है । बौद्ध एवं जैन दर्शनों के मूल्यों को अपनाकर इन उपर्युक्त समस्याओं का समाधान किया जा सकता है क्योंकि बौद्ध व जैन दर्शनों के मूल्य व्यावहारिक हैं। बुद्ध तथा महावीर ने वही कहा है जो जीवन के लिए व्यावहारिक और उपयोगी है । सभी धर्म व्यक्ति को कृपालु बनने, नैतिकता, मित्रता व प्यार का संदेश देते हैं । यदि व्यक्ति को नैतिक मूल्यों से सिंचित किया जाए तो उसमें स्नेह व नैतिकता की अविरल धारा को विकसित किया जा सकता है, जो एक सभ्य समाज के लिए आवश्यक है । इसी प्रकार, वैमनस्यता की भावना में जलते विश्व को बंधुत्व व मित्रता की भावना से ही ठंडा किया जा सकता है और वैश्वीकरण के दौर में हम केवल अपने राष्ट्र का हित करके

स्वयं को सुरक्षित महसूस नहीं कर सकते । हमें सम्पूर्ण विश्व को शांति व मित्रता का संदेश देना होगा तथा मानव कल्याण को सर्वोपरि बनाना होगा, तब ही शांति की स्थापना हो सकती है और यह सब बौद्ध एवं जैन दर्शनों की शिक्षाओं से सम्भव हो सकता है क्योंकि दोनों दर्शनों ने ही सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य आदि नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों पर बल दिया है । दोनों ही दर्शन व्यक्ति के साथ-साथ एक आदर्श समाज को निर्मित करने के लिए नैतिक व सामाजिक मूल्यों के पालन करने हेतु सदाचार का मार्ग प्रदर्शित करते हैं । विघटित होते नैतिक व सामाजिक मूल्यों को बचाने के लिए बौद्ध एवं जैन दर्शनों के नीतिशास्त्र को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है । हम कानून व दंड के बल पर समाज में व्यवस्था तो बना सकते हैं परन्तु आंतरिक शांति, प्रेम व सौहार्द की भावना को विकसित नहीं कर सकते । इसलिए यह आवश्यक प्रतीत होता है कि व्यक्ति के भौतिक व आर्थिक विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक विकास भी किया जाए । आध्यात्मिक विकास केवल हमारे परम्परागत नैतिक व सामाजिक मूल्यों से ही संभव है । आज भागदौड़ भरी जिंदगी में प्रत्येक व्यक्ति मानसिक चिंता तथा अन्य बिमारियों जैसे तनाव, हताशा, कुण्ठा और मन की अस्थिरता इत्यादि से ग्रस्त है । बौद्ध-दर्शन की 'ध्यान की विपस्यना पद्धति' तथा जैन दर्शन की 'ध्यान अनुप्रेक्षा पद्धति' उपर्युक्त बिमारियों को दूर करने में उपयोगी सिद्ध हो रही हैं । बौद्ध एवं जैन दर्शन

व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर मानव को बुराइयों से दूर रखने में अहम् भूमिका निभा सकते हैं । अत: हम स्पष्टतया कह सकते हैं कि बौद्ध एवं जैन दर्शनों के नैतिक व सामाजिक मूल्यों की प्रासंगिकता आज अधिक प्रतीत होती है ।

1.5 निष्कर्ष

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बौद्ध एवं जैन दर्शनों की शिक्षाओं ने मानव को जीवन जीने का एक नया आयाम प्रदान किया है जिसे कभी भी नकारा नहीं जा सकता । ये शिक्षायें लगभग 2500 वर्ष पूर्व की हैं लेकिन इनकी उपयोगिता वर्तमान समय में नैतिक व सामाजिक मूल्यों के अवमूल्यन के कारण और अधिक बढ़ जाती है क्योंकि बौद्ध एवं जैन दर्शन के मूल्य व्यक्तिगत हित के साथ-साथ सामूहिक हित को भी महत्त्व देते हुए मानव कल्याण पर बल देते हैं । यदि हम बौद्ध एवं जैन दर्शन के नैतिक व सामाजिक मूल्यों का स्वयं व्यावहारिक स्तर पर प्रयोग करे तो वर्तमान में विद्यमान समस्याओं (नैतिक व सामाजिक मूल्यों का अवमूल्यन) का स्वत: समाधान हो जायेगा तथा वैश्विक स्तर पर भी इन मूल्यों के द्वारा शांति व सहयोग की धारा को प्रवाहित किया जा सकता है । बौद्ध एवं जैन दर्शनों द्वारा प्रतिपादित नैतिक व सामाजिक मूल्यों से व्यक्तित्व का नैतिक व मानवीय विकास होता है। नैतिक जीवन के सर्वोच्च आदर्श को प्राप्त करने के लिए बौद्ध व जैन दर्शन का नैतिक मार्ग युक्ति-युक्त है ।

अन्त में हम कह सकते हैं कि इन शिक्षाओं को अपनाकर समाज में सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, न्याय व समानता जैसे नैतिक व सामाजिक मूल्यों को पुनः स्थापित किया जा सकता है ।

संदर्भ सूची

1. जैन, धर्मचन्द, **बौद्ध दर्शन के प्रमुख सिद्धान्त,** पृ० 6
2. मैनी, धर्मपाल, **मानव मूल्य-परक शब्दावली का विश्वकोश**, खण्ड-4, पृ० 1419
3. मिश्र, नित्यानंद, **नीतिशास्त्रः सिद्धांत और व्यवहार**, पृ० 197
4. मैकेन्जी, जे० एस०, **मैनुवल ऑफ एथिक्स**, पृ० 177, 219
5. पेरी, आर० बी०, **दा सेन्ट्रल थ्यूरी ऑफ वैल्यू**, पृ० 115-116
6. पेरी, आर० बी०, **रीयलम ऑफ वैल्यू,** पृ० 439
7. अरबन, डब्लयू एम०, **फंडामेंटलस ऑफ एथिक्स**, पृ० 18
8. टीटस, हेराल्ड एच०, **एथिक्स फॉर टुडे**, पृ० 211
9. पांडेय, गोविन्द चन्द्र, **मूल्य मीमाँसा**, पृ० 253-254
10. मिश्र, हृदयनारायण एवं अवस्थी, जमुना प्रसाद, **नीतिशास्त्र की भूमिका,** पृ० 168-170
11. नगेन्द्र, **भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका**, पृ० 161
12. मैकेन्जी, जे० एस०, **नीति प्रवेशिका,** पृ० 191-192
13. हस्टिंग, जेम्स्, **एन्सायिक्लोपिडिया ऑफ रिलिजन एंड एथिक्स**, पृ० 584
14. अरबन, डब्ल्यू० एम०, **पूर्वोद्धृत**, पृ० 163
15. राधाकृष्णन, एस०, **दा प्रेजेंट क्राइसस ऑफ फेथ**, पृ० 21
16. **ऋग्वेद,** 3/62/10.11
17. **वही,** 10/173/11
18. पाण्डे, गोविन्दचन्द्र, **मूल्य-मीमांसा**, पृ० 73-77
19. **वही,** पृ० 18, 156
20. **यजुर्वेद,** 1/15
21. गिरी, रघुनाथ, **आचारशास्त्र (भारतीय एवं पाश्चात्य),** पृ० 340
22. तातेड़, सोहन राज एवं सिंह, विद्यासागर, **तत्त्व एवं आचार मीमांसा**, पृ० 123
23. मिश्र, ब्रह्म शंकर (व्याख्याकार), **शुक्रनीति (द्वितीय अध्याय),** पृ० 97
24. **हितोपदेश,** 1.3.71
25. उपाध्याय, बलदेव, **बौद्ध-दर्शन मीमांसा,** पृ० 3
26. आचार्य नरेन्द्रदेव, **बौद्ध धर्म-दर्शन,** पृ० 20
27. सांकृत्यायन, राहुल, **बौद्ध दर्शन,** पृ० 23-25
28. जैन, धर्म चन्द, **पूर्वोद्धृत,** पृ० 16
29. सिन्हा, हरेन्द्र प्रसाद, **धर्म दर्शन की रूपरेखा** (द्वितीय खंड), पृ० 20-21
30. **तत्वार्थ सूत्र,** 1.1
31. सिन्हा, हरेन्द्र प्रसाद, **भारतीय दर्शन की रूपरेखा,** पृ० 260-61
32. जैन, कैलाश चन्द्र, **जैन धर्म का इतिहास (भाग-1)**, पृ० 111-120